

सी यू के बुलेटिन

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने 78वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया

गुरुवार, 15 अगस्त: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अटूट उत्साह और देशभक्ति के साथ 78वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, सभा को संबोधित किया और अपने भाषण में राष्ट्र-निर्माण में विश्वविद्यालयों की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि विदेशी संस्थान क्यों उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं और अधिकांश छात्र विदेश में अपनी उच्च शिक्षा क्यों प्राप्त करना चाहते हैं। उन्होंने सार्वजनिक धन का जिम्मेदारी से उपयोग करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया, क्योंकि वे करदाताओं के पैसे पर निर्भर हैं। उन्होंने उन्हें ग्रामीण विकास पर अपने शोध पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया, स्वतंत्रता के 77 वर्षों के बाद भी ग्राम बुनियादी ढांचे के साथ चल रहे मुद्दों पर प्रकाश डाला। प्रो. सत्यनारायण ने सूटनूर गांव में हर घर तिरंगा अभियान में विश्वविद्यालय की भागीदारी का हवाला दिया। कुलपति ने राष्ट्र की स्वतंत्रता में उनके बलिदान और योगदान को याद करते हुए सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस उत्सव को छात्रों और संगीत और ललित कला के प्राध्यापकों द्वारा प्रदान किए गए पारंपरिक नृत्यों और देशभक्ति गीतों सहित छात्रों द्वारा सांस्कृतिक प्रदर्शन द्वारा चिह्नित किया गया था। डॉ. रविकिरन नाकोड़ ने अपने आनंदमय तबला प्रदर्शन से दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। इस कार्यक्रम का डॉ. कुमार मंगलम और डॉ. रेशमा नादाफ ने संचालन किया।

कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादर, प्रो. चन्नवीर आर एम, डॉ. बसवराज कुबकड्डी, वित्त अधिकारी डी रामादोराई, डीन, विभागाध्यक्ष संकाय सदस्य, गैर-शिक्षण कर्मचारी और छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम स्वतंत्रता को महत्व देने और सामाजिक समग्र विकास में सार्थक योगदान देने की प्रतिबद्धता के साथ समाप्त हुआ।





मुझे अपने सभी विद्यार्थियों को नव वर्ष की शुरुआत करते हुए हार्दिक बधाई देते हुए प्रसन्नता हो रही है। इस नए वर्ष को नई शिक्षाओं, अनुभवों और अवसरों का एक समृद्ध वर्ष होने दें। जैसे ही हम एक नए वर्ष को अपनाते हैं, हमारे जीवन का एक नया अध्याय हमारे सामने प्रकट होता है। इस मोड़ पर, आइए अतीत से संजोना, सीखना और भूल जाना याद रखें। यह नया वर्ष हमें बहुत कुछ फिर से सीखने का अवसर भी प्रदान करे।

सीखना, भूल जाना और पुनः से सीखना हमारे व्यक्तित्व और राष्ट्र के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं

मुझे आशा है कि आप सभी विवृत्त और जिज्ञासु मन से इस यात्रा को अपनाएं। मैं सभी को अपने आराम क्षेत्रों से परे अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ क्योंकि यही वह जगह है जहाँ विकास होता है। अपने आप को चुनौती दें, अपनी आलोचना करें और चीयरलीडर बनें। जीवन एक केकवॉक नहीं है; चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करना अपरिहार्य है। लेकिन निराश मत होइए। सबसे सफल लोगों को सबसे अधिक विफलताओं का सामना करना पड़ा है। जब तक आप असफलता के माध्यम से चतुराई नहीं करते, आप अपने शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन में महानता प्राप्त नहीं कर सकते। सफलता निरंतरता, समर्पण और कड़ी मेहनत का परिणाम है। लेकिन जैसा कि हम सफलता के लिए प्रयास करते हैं, आइए हम ईमानदारी, नैतिकता, दयालुता और करुणा जैसे मूल्यों को भी बनाए रखें।

विश्वविद्यालय केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए एक स्थान नहीं है। यह समग्र विकास का निवास स्थान है। आपकी सफलता को आपके ग्रेड द्वारा परिभाषित नहीं किया गया है। एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के इस युग में मानव जाति की अंतिम सफलता मानव मूल्यों को विकसित करने और पोषित करने की हमारी क्षमता से निर्धारित होती है।

आइए हम शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के बराबर मानव मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध रहें। आइए हम मानवता की भलाई के लिए खुद को समर्पित करें।

प्रो. बट्टू सत्यनारायण

कुलपति

कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी



कला छात्रों के समग्र विकास बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक का समर्थन करके शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पेंटिंग, संगीत, नृत्य और थिएटर जैसे विभिन्न कला रूपों के साथ जुड़ना, छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ाता है। ये मंच छात्रों को खुद को व्यक्त करने और अपनी भावनाओं और विचारों को स्पष्ट करने की अनुमति देते हैं, जिन्हें वे अन्यथा संवाद करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। विभिन्न कला रूपों को सीखना संज्ञानात्मक क्षमताओं और समग्र मानसिक कामकाज को भी बढ़ावा देता है। छात्र महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करते हैं और अपनी समस्या-समाधान क्षमताओं में सुधार करते हैं। अक्सर, वे कुछ अद्वितीय बनाते हैं और चुनौतियों का सामना करने के नए तरीकों की खोज करते हैं।

विभिन्न अध्ययनों ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि शिक्षा पाठ्यक्रम में विभिन्न कला रूपों को शामिल करना छात्रों के विश्वास को बढ़ावा देता है। छात्र कुछ सार्थक और अद्वितीय बना सकते हैं और नए विचारों का पता लगा सकते हैं। ये गतिविधियाँ व्यक्तियों को आत्म-मूल्य की एक मजबूत भावना को बढ़ावा देने के अलावा, दुनिया भर में मान्यता प्राप्त करने में सक्षम बनाती हैं।

इन कला रूपों में महारत हासिल करके, छात्र विविध संस्कृतियों और उनकी सुंदर कलात्मक अभिव्यक्तियों के बारे में सीख सकते हैं। वे दुनिया के विभिन्न हिस्सों से विभिन्न शैलियों, माध्यमों और अवधारणाओं के संपर्क में हैं, जो उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त, छात्र विभिन्न सांस्कृतिक इतिहास में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और अपनी कला के माध्यम से इन परंपराओं की सराहना विकसित कर सकते हैं।

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में एक संगीत और ललित कला विभाग है जो छात्रों को इन कला रूपों को सीखने और अपनी कलात्मक क्षमताओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सीयूके में इन विभागों में पीएच.डी. कार्यक्रम भी हैं और छात्रों को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अपने कला रूपों को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। ये कार्यक्रम उत्साह और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देते हैं और व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में योगदान देते हैं, जिससे अंततः जीवन में जबरदस्त सफलता मिलती है।

प्रो. आर. आर. बिरादर

कुलसचिव

कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुरगी

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" पर अभिविन्यास



शुक्रवार, 2 अगस्त: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा एनईपी 2020 पर एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, जिसमें छात्रों के भविष्य को सशक्त बनाने के लिए लचीले, बहु-विषयक और मूल्य वर्धित पाठ्यक्रमों को लागू करने की नीति के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है। कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और छात्रों को उनके हितों के अनुरूप विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम प्रदान करने में एनईपी 2020 के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिकों को सतत सामाजिक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए, जबकि मानविकी और सामाजिक विज्ञान के शोधकर्ताओं को वैज्ञानिक स्वभाव अपनाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम एनईपी 2020 के दिशानिर्देशों के अनुसार तैयार किया गया है। विश्वविद्यालय ने पीएम गतिशक्ति से संबंधित विभिन्न बहु-विषय, मूल्य वर्धित, सामान्य निर्वाचन और अन्य पाठ्यक्रम शुरू किए और छात्रों को उन विषयों का चयन करने के लिए प्रोत्साहित किया जिनके बारे में वे उत्साहित हैं। उन्होंने पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद छात्रों की रोजगार क्षमता के बारे में अपना विश्वास व्यक्त किया। इस अवसर पर, कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने प्रतिभाशाली, कुशल और कुशल कार्यबल का उत्पादन करने के लिए एनईपी 2020 के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला जो भारत को हार्ड और सॉफ्ट स्किल का पावरहाउस बना सके और कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और समय प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया।

बारे में अपना विश्वास व्यक्त किया। इस अवसर पर, कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने प्रतिभाशाली, कुशल और कुशल कार्यबल का उत्पादन करने के लिए एनईपी 2020 के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला जो भारत को हार्ड और सॉफ्ट स्किल का पावरहाउस बना सके और कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और समय प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया।

छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष प्रो. चन्नवीर आर एम ने भारत की सांस्कृतिक विविधताओं, भाषाओं और धर्मों पर चर्चा की और सीयूके को एक मिनी-इंडिया के रूप में वर्णित किया, जिसमें छात्रों को सद्भाव में रहने और अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए विश्वविद्यालय के उन्नत बुनियादी ढांचे का उपयोग करने का सुझाव दिया।

कार्यक्रम समन्वयक प्रो. एम. प्रशांत ने एनईपी 2020 की प्रमुख विशेषताओं और क्रेडिट फ्रेमवर्क को रेखांकित किया, जबकि डॉ. संदीप एन ने एनपीटीईएल और स्वयं जैसे ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म के बारे में बताया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. उदय पाटिल के स्वागत भाषण के साथ हुई और इसका समापन डॉ. एन. बाबू के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।



एआई और अनुसंधान पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

बुधवार, 14 अगस्त: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय ने डॉ. एस.आर. रंगनाथन की 132वीं जयंती के अवसर पर भारतीय पुस्तकालय संघ, नई दिल्ली के सहयोग से एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में "एआई एंड रिसर्च: एप्लिकेशन्स एंड इम्प्लिकेशन्स" की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया।

संगोष्ठी की शुरुआत भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ. एस.आर. रंगनाथन को इंदिरा गांधी विकास अनुसंधान संस्थान (आईजीआईडीआर), मुंबई के मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. एस.एम पूजार द्वारा दी गई श्रद्धांजलि के साथ हुई। उद्घाटन भाषण ने आधुनिक पुस्तकालयों को आकार देने पर एआई के प्रभाव पर प्रकाश डाला और अनुसंधान प्रक्रिया को सरल बनाने में एआई की भूमिका पर जोर दिया।

प्रभारी कुलसचिव प्रो. चन्नवीर आर एम ने "गुड मॉर्निंग सीयूके सर्विसेज" का उद्घाटन किया और शोधकर्ताओं से अनुसंधान कार्य में नियोजित करते समय एआई उपकरणों का प्रभावी ढंग से और सावधानीपूर्वक उपयोग करने का आग्रह किया।

विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष और आयोजन सचिव डॉ. पी एस कटीमनी ने संगोष्ठी के उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बताया और सीयूके के हितधारकों के उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देने के लिए सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय उपयोगकर्ता पुरस्कार प्रदान किए।

संगोष्ठी में श्री प्रवीण शेट द्वारा "लर्न एआई विद पैकेट" "21वीं सदी की विघटनकारी प्रौद्योगिकियों (एआई, मशीन लर्निंग, आईओटी और कंप्यूटर विज्ञान) का समाज पर प्रभाव", डॉ. गुरुराज मुकाराम्बी, श्री शिवहरन द्वारा "जोव एंड राइट फुल, ए ऑटोमेटेड



प्रूफरीडिंग टूल"; "व्याकरण और एआई" श्री बिनोय द्वारा और श्री गुप्ता वी द्वारा "रिमोट एक्सेस एंड डिजिटल पोर्टल" सहित कई प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। संगोष्ठी ने अनुसंधान में एआई के बढ़ते प्रभाव को सफलतापूर्वक संबोधित किया और इसकी चुनौतियों और अवसरों का प्रदर्शन किया। संगोष्ठी का समापन डॉ. सतीश वी. तोटर, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, सीयूके द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने प्रतिनिधियों, प्रतिभागियों, अनुसंधान विद्वानों और आयोजकों के योगदान और संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

तकनीकी नवाचारों ने समाज में अपार परिवर्तन लाए हैं



शनिवार, 17 अगस्त: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय ने एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें कंप्यूटर साइंस, सीयूके के सहायक प्राध्यापक डॉ. गुरुराज मुकरंबी ने "एआई एंड रिसर्च : इम्प्लिकेशन्स एंड ऐप्लिकेशन्स" पर एक विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने समाज पर नवीन प्रौद्योगिकियों के अभूतपूर्व प्रभाव और मानव जीवन को बदलने की उनकी क्षमता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने आगे कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, 5जी, ड्रोन और मानव जीवन पर क्वांटम कंप्यूटिंग सहित उन्नत प्रौद्योगिकियों के बढ़ते प्रभाव ने शिक्षा, आतिथ्य और पर्यटन, दूरसंचार, पुरातत्व और शासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति पैदा की।

पारंपरिक मीडिया धीरे-धीरे विभिन्न ओटीटी प्लेटफार्मों, यूट्यूब और अधिक जैसे डिजिटल मीडिया के लिए अपने दर्शकों को खो रहा है।

उन्होंने सिफारिश की कि छात्र बदलते शैक्षणिक परिदृश्य में प्रासंगिक बने रहने के लिए अपने मुख्य विषयों के साथ नई प्रौद्योगिकियाँ सीखें। उन्होंने एक नई नवीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के निर्माण में एनईपी 2020 के महत्व पर प्रकाश डाला जो प्रतिभाशाली, कुशल और कुशल कार्यबल का उत्पादन कर सके। उन्होंने शिक्षा में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने, इन नीतियों को क्रियान्वित करने और इसे सफल बनाने में शिक्षकों की भूमिका को स्वीकार किया।

“दुनिया का दौरा करें, किताब पढ़ें”

शनिवार, 31 अगस्त: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में एमबीए पर्यटन और यात्रा प्रबंधन के छात्रों ने विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पंद्रह दिवसीय राष्ट्रीय अध्ययन दौरा शुरू किया। फ्लैग ऑफ पर प्रो. आरआर बिरादार सीयूके के कुलसचिव ने कहा, किसी पुस्तक को पढ़ने की तुलना में राष्ट्र का दौरा करना अधिक प्रबुद्ध है; इसलिए प्रसिद्ध कहावत: “टूर द वर्ल्ड”, सीड द बुक”। उन्होंने उन्हें यात्रा को व्यावहारिक शिक्षा के रूप में लेने और पर्यटन और यात्रा प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं का पालन करने और गंतव्यों, पर्यटन बुनियादी ढांचे, सामुदायिक भागीदारी, स्वच्छता और सफाई, पर्यटन के सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव, यात्रा कार्यक्रम की तैयारी और निष्पादन, भीड़ प्रबंधन के मुद्दों और चुनौतियों आदि के बारे में जानने और दिन के अंत में एक व्यापक रिपोर्ट बनाने की सलाह दी।

पर्यटन और होटल प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गौतम डी ने छात्रों से पूरी यात्रा के दौरान जिम्मेदार होने का आग्रह किया और उन्हें अपने स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता देने के साथ-साथ स्थानीय समुदाय का सम्मान करने की सलाह दी।

यात्रा कार्यक्रम में अहमदाबाद, जयपुर, दिल्ली, अमृतसर, जालंधर, हरिद्वार, आगरा, मथुरा और हैदराबाद के प्रतिष्ठित गंतव्य शामिल हैं। अध्ययन दौरा छात्रों को यात्रा कार्यक्रम योजना और निष्पादन का अनुभव करने और पर्यटन चुनौतियों का प्रबंधन करना सीखने में सहायता करता है। विभाग के संकाय सदस्य डॉ. शिव एम और डॉ. जगदीश बिरादार यात्रा के दौरान समूह के साथ रहेंगे।



सीयूके में योग कक्षाओं का उद्घाटन



मंगलवार, 3 सितंबर: शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग, सीयूके ने शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के लिए योग कक्षाओं का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि प्रो. रविकांत यशवंतराव पाटिल, डी एस टी एस मंडल फार्मसी कॉलेज सोलापुर के प्राचार्य ने मानसिक और शारीरिक कल्याण के लिए योग के महत्व और इसके समग्र लाभों के बारे में एक विस्तृत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि ध्यान एकाग्रता के विघटन करने की प्रक्रिया है जो प्राकृतिक एकाग्रता की ओर ले जाती है। उन्होंने योग सूत्र, कुंडलिनी योग और हठा योग जैसी विभिन्न तकनीकों के बारे में बात की, यह देखते हुए कि 195 में से केवल तीन पतंजलि सूत्र शारीरिक पहलुओं को संबोधित करते हैं, जबकि बाकी मानसिक पहलुओं के बारे में बात करते हैं।

कुलपति ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और हमारे दैनिक जीवन में योग को शामिल करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि योग, व्यायाम, खेल और पैदल चलने जैसी शारीरिक गतिविधियां एक स्वस्थ जीवन जीने और छात्रों को स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने और विश्वविद्यालय की पूरी सुविधाओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने भी बात की। श्रीजा ने कार्यक्रम का संचालन किया और गोपिका ने सभा का स्वागत किया है। योग प्रशिक्षकों डॉ. संतोष बशेटी और डॉ. ज्योस्तना द्वारा प्रदर्शन और प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए। प्रो. जी. आर. अंगड़ी, डॉ. बासवराज कुबकड्डी, डॉ. लिंगमूर्ति, शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।

सीयूके में शिक्षक दिवस मनाया गया



गुरुवार, 5 सितंबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा एक महान शिक्षक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर शिक्षक दिवस मनाया गया। प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने सभा को संबोधित किया और राष्ट्र

निर्माण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षक समाज की रीढ़ हैं और 2047 तक विकसित भारत को प्राप्त करने के लिए हमें ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं को लागू करके ग्रामीण और

शहरी क्षेत्रों के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित सीयूके जैसे विश्वविद्यालयों को आसपास के गांवों को अपनाना चाहिए और विशेषज्ञ दिमागों और संसाधनों का लाभ उठाकर उनके समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने इस दृष्टि को प्राप्त करने में सभी विषयों के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. सत्यनारायण ने सभा का स्वागत किया और परिचयात्मक टिप्पणियां दीं। डॉ. रवि कंगई ने इस अवसर पर शिक्षकों की भूमिका के बारे में भी बताया। इस अवसर पर यूजीसी द्वारा आयोजित शिक्षक दिवस के अवसर पर भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अनिल काकोडकर द्वारा दिए गए एक विशेष व्याख्यान की स्क्रीनिंग की गई। परीक्षा नियंत्रक, कोटा साईकृष्ण, वित्त अधिकारी रामादुराई, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. परशुराम कट्टीमनी, छात्र कल्याण डीन डॉ. बसवराज कुबकड्डी, प्रो. विक्रम विसाजी, प्रो. बी बी पुजार और सभी संकाय सदस्य उपस्थित थे।

उप कुलसचिव डॉ. रवींद्रनाथ पंडित ने कार्यक्रम का संचालन किया, डॉ. गौरीशंकर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया, और संगीत और ललित कला विभाग के छात्रों ने राष्ट्रीय गीत और राष्ट्र गान प्रस्तुत किया।

सीयूके में विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस मनाया गया



मंगलवार, 10 सितंबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग ने विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्देश्य किशोरों और युवाओं के बीच आत्मघाती विचारों की बढ़ती दर के मुद्दे को संबोधित करना था। डॉ. अश्विनी एन.वी. मुक्ता फाउंडेशन के संस्थापक और निदेशक ने आत्महत्या को रोकने के उपाय करने में सामूहिक प्रयासों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि न केवल परामर्शदाता बल्कि हर कोई उनकी रक्षा के लिए अपने प्रियजनों के लिए एक द्वारपाल हो सकता है।

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने अध्यक्षीय भाषण दिया और छात्रों में जागरूकता पैदा करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों में ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि युवा वयस्क भावनात्मक रूप से कमजोर हैं और संस्थानों को इस तरह के चरम कदमों को रोकने के लिए इस मुद्दे को संबोधित करना चाहिए।

कुलसचिव प्रो. आरआर बिरादार ने आत्महत्या के नकारात्मक प्रभावों जैसे आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक नुकसान पर चर्चा की। स्कूल ऑफ सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज के डीन प्रो. चन्नवीर आरएम ने जोर देकर कहा कि आत्महत्या के पारिस्थितिक कारण हो सकते हैं, न कि केवल इंटरपर्सनल कारण। इसलिए, कई स्तरों पर हस्तक्षेप होना चाहिए। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अकृति श्रीवास्तव ने किया, जिन्होंने वर्ष के विश्व आत्महत्या निवारण दिवस विषय "चेंजिंग द नैरेटिव ऑन सुसाइड" को "स्टार्ट द कन्वर्सेशन" की कार्रवाई के आह्वान के साथ पेश किया।

इस कार्यक्रम में प्रो. विजयेंद्र पांडेय, प्रो. रोमेट जॉन, डॉ. रवींद्र, संकाय सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया। इस आयोजन का आदर्श वाक्य आशावाद फैलाना और प्रभावी आत्महत्या रोकथाम रणनीतियां बनाना है।

सीयूके में स्वच्छता ही सेवा गतिविधियों का उद्घाटन

शनिवार, 14 सितंबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने महात्मा गांधी जयंती पर 2 अक्टूबर 2024 को दो सप्ताह तक चलने वाले स्वच्छता ही सेवा 2024 अभियान का आयोजन किया। स्कूल ऑफ सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज के डीन प्रो. चन्नवीर आरएम ने महात्मा गांधी द्वारा दी गई खादी, सामाजिक सद्भाव और स्वच्छता को अपनाने सहित विकसित भारत के लिए 18 बिंदुओं के रचनात्मक एजेंडे पर जोर दिया। उन्होंने ग्रामीणों के बीच स्वच्छ भारत मिशन के लाभों की वकालत करने और भारत को सुरक्षित और स्वच्छ बनाने के लिए एमएसडब्ल्यू छात्रों की मदद से आलंद तालुका में शौचालय निर्माण और उपयोग को बढ़ावा देने के अपने अनुभवों को साझा किया।



छात्रों कल्याण डीन डॉ. बसवराज कुबकड्डी ने स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के लिए स्वच्छता के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि यह नागरिकों की जिम्मेदारी है कि वे स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पर्यावरण को स्वच्छ रखें। उन्होंने लोगों से स्वच्छता को एक आदत और मूल्य के रूप में आत्मसात करने और स्वाभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता विषय को बढ़ावा देने का आग्रह किया।

स्वच्छता ही सेवा 2024 के लिए सीयूके नोडल अधिकारी डॉ. गणपति बी. सिन्नूर ने अभियान की दो सप्ताह की गतिविधियों को रेखांकित किया। इन गतिविधियों में कैम्पस, बस स्टैंड, ड्रेनेज सिस्टम और कड़गंची और सुटनूर में सार्वजनिक स्थानों की सफाई शामिल है। यह अभियान स्थानीय ग्राम पंचायतों के सहयोग से चलाया जा रहा है और इसमें वॉकथॉन और डोर-टू-डोर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, इस वर्ष

के स्वच्छ भारत मिशन के विषय पर केंद्रित कविता लेखन, पेंटिंग और "वेस्ट टू आर्ट" जैसी प्रतियोगिताएं होंगी।

इस पहल के दौरान सफाई कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर भी आयोजित किए गए। इस अवसर पर प्रो. चन्नवीर आर एम ने सभी संकाय सदस्यों और छात्रों को स्वच्छता शपथ दिलाई। प्रो. एम एस पसोडी, प्रो. पवित्रा अलूर, डॉ. ज़ोहेर, डॉ. दीप्ति और अन्य संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे। डॉ. शैलजा कोणेक ने कार्यक्रम का संचालन किया और सभा का स्वागत किया। एनएसएस समन्वयक डॉ. शिवम मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। संगीत विभाग के छात्रों ने राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रगान प्रस्तुत किया।

सीयूके में "विकासित भारत@2047: वे टुवर्ड्स सेल्फ-रिलायंस" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी



रविवार, 15 सितंबर: आर्थिक अध्ययन और योजना विभाग, सीयूके ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), नई दिल्ली के सहयोग से 17-18 सितंबर 2024 से "विकासित भारत @ 2047: वे टुवर्ड्स सेल्फ-रिलायंस" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी की। प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और डॉ. एन.आर. बनमूर्ति मद्रास स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के निदेशक ने मुख्य भाषण दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रो. अश्विनी महाजन, आईआईएम बेंगलुरु से प्रो. जी रमेश सागर एशिया प्राइवेट लिमिटेड के श्री विद्यासागर लिमिटेड, श्री. बी इंद्रसेन रेड्डी, हैदराबाद के एक सौर उद्यमी, कुलसचिव प्रो. आर आर आर बिरादर, प्रो. के पद्मश्री और डॉ. बसवराज एमएस संगोष्ठी के आयोजन सचिव ने उद्घाटन सत्र में भाग लिया। दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान विशेष व्याख्यान, पैनल चर्चा

और पांच तकनीकी सत्र हुए। इस सेमिनार में लगभग 100 शोधकर्ताओं ने भाग लिया और विकसित भारत के विभिन्न पहलुओं पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। हैदराबाद के इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) के अंजल प्रकाश ने समापन सत्र में कुशल जल प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया और इस बात पर प्रकाश डाला कि अहर-पायने एक सतत जल प्रबंधन प्रणाली है जो अस्थिर प्रथाओं से बाधित है। उन्होंने नदियों और जल स्रोतों में प्रदूषण के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार को प्रदूषणकारी गतिविधियों को सख्ती से विनियमित करना चाहिए।

कुलसचिव प्रो. आरआर बिरादर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने आर्थिक विकास के लिए प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने

के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, बेरोजगारी कम करने, कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करने और कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाकर लैंगिक असमानता को दूर करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। विकास भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ये प्रयास आवश्यक हैं।

इस अवसर पर व्यावसायिक अध्ययन स्कूल, प्रो. के पद्मश्री, संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस लिंगमूर्ति, डॉ. सुमा स्कैरिया, डॉ. बसवराज एमएस, और डॉ. शिवकुमार बेल्ली मंच पर उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रतिनिधि, संसाधन व्यक्ति, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।

सीयूके में भर्ती हुए नए छात्रों का स्वागत



शुक्रवार, 20 सितंबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने नए भर्ती किए गए स्नातकोत्तर छात्रों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया। कर्नाटक उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश न्यायमूर्ति रामचंद्र डी हुद्दार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और छात्रों को अपने शिक्षकों का सम्मान करने, समय पर रहने और कक्षा में ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने उनसे अपने प्रवास के दौरान परिसर की सभी सुविधाओं का उपयोग करने का भी आग्रह किया।

माननीय कुलपति प्रो. बट्टु सत्यनारायण ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और छात्रों को शिक्षा को महत्व देने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि यह सफलता की नींव बनाता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जबकि भौतिक धन स्थायी नहीं है, ज्ञान कायम है। उन्होंने छात्रों को ज्ञान के आधार पर करियर बनाने और एक अच्छी तरह से पूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी। उन्होंने यह भी कहा कि समाज में अच्छे लोगों की कमी है और सभी से आग्रह किया कि वे राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनने का प्रयास करें।

कुलसचिव प्रो. आरआर बिरादार ने छात्रों के जीवन के सुनहरे नियमों जैसे कड़ी मेहनत, आत्मविश्वास, ईमानदारी, सकारात्मक सोच, दूसरों के साथ तुलना नहीं करने, भावनात्मक स्थिरता, आत्म-नियंत्रण और आत्म-अनुशासन पर प्रकाश डाला और उन्हें अपने समग्र विकास के लिए एनएसएस और योग गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर प्रोक्टर डॉ. वेंकटरमन दोड्डी, परीक्षा नियंत्रक, कोटा साई कृष्ण, पुस्तकालयाध्यक्ष, डॉ. पी एस कट्टीमनी, आंतरिक शिकायत समिति के अध्यक्ष प्रो. सुनीता मंजनबैल, अनुसंधान और विकास प्रकोष्ठ और नोडल अधिकारी शिकायत प्रकोष्ठ, प्रो. सत्यनारायण, मुख्य वार्डन, डॉ. बसवराज एमएस, सांस्कृतिक समन्वयक और एंटी-रेगिंग अधिकारी, डॉ. मल्लिकार्जुन एस हुगार ने अपने-अपने विभागों और प्रकोष्ठों द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं और सेवाओं के बारे में बताया। छात्र कल्याण के डीन बसवराज कुबकड्डी ने स्वागत किया और धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

भीमल्ली गांव में सामुदायिक योग जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया

शनिवार, 21 सितंबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आदर्श विद्यालय, भीमल्ली गांव, कलबुर्गी तालुक में सामुदायिक योग जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से बच्चों के मानसिक और शारीरिक कल्याण के लिए दैनिक जीवन में योग के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

कुलसचिव प्रो. आरआर बिरादार, सीयूके ने सभा को संबोधित किया और राष्ट्र-निर्माण में छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि “बच्चे राष्ट्र की संपत्ति हैं और देश का विकास बच्चों के एकीकृत विकास पर निर्भर करता है”। उन्होंने जोर देकर कहा कि योग का अभ्यास करने की नियमित आदत अध्ययन में स्मृति शक्ति, एकाग्रता और प्रदर्शन को बढ़ाती है और बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाती है। उन्होंने यह भी कहा कि एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर में रहता है और बच्चों को दैनिक अभ्यास के रूप में योग को अपनाने की सलाह दी क्योंकि विकसित भारत 2047 उनके समग्र विकास पर निर्भर करता है।

इस अवसर पर श्री कलिंग डी, प्राचार्य, सरकारी आदर्श विद्यालय भीमल्ली, प्रो. जी. आर. अंगडी डीन, शिक्षा और प्रशिक्षण स्कूल, डॉ. एन. बाबू, योग प्रशिक्षक ज्योत्सना



अंबेवाडकर, डॉ. देविका, डॉ. सुचिष्मिता साहू उपस्थित थे। श्री तरुण ने कार्यक्रम का संचालन किया और सभा का स्वागत किया। प्राचार्य, श्री कलिंग डी. ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। सीयूके के छात्र गोपीका, नरेंद्र और निखिल ने आसनों का प्रदर्शन किया और लगभग 200 से अधिक छात्रों ने योग कार्यक्रम में भाग लिया।

सीयूके में दो नए छात्रावास भवनों का उद्घाटन

शनिवार, 21 सितंबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने दो नए छात्रावास भवनों का उद्घाटन किया है। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने घोषणा की कि ये नए छात्रावास कुल 1,080 छात्रों को समायोजित कर सकते हैं। यह विश्वविद्यालय के परिसर में कुल छात्र आवास को 3,000 से अधिक लाता है, जिससे यह पूरी तरह से आवासीय विश्वविद्यालय बन जाता है। इसके अलावा, उन्होंने चार और छात्रावासों के निर्माण, चार से पांच नए विभाग शुरू करने और सभी कार्यक्रमों में छात्र के प्रवेश को दोगुना करने की योजना की रूपरेखा तैयार की।

इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार, मुख्य अभियंता श्री आई एस महागांवकर, डीएसडब्ल्यू डॉ. बसवराज कुबकड्डी, मुख्य छात्रपाल डॉ. बसवराज एम एस, सीपीडब्ल्यूडी इंजीनियर विक्रम शर्मा, प्रो. चन्नवीर आर एम, प्रो. बसवराज डोणूर, प्रो. आर एस हेगडी, प्रो. जी आर अंगडी अन्य उपस्थित थे।

गुलबर्गा मिडटाउन के रोटरी क्लब ने पास के गांवों से आने वाली महिला आउटसोर्सिंग कर्मचारियों के लिए कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी में छात्रावास वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया है।

इस कार्यक्रम में सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण, कुलसचिव प्रो. आर



आर बिरादार, आरटीएन क्लब के अध्यक्ष नागराज पाटिल, क्लब के सचिव आरटीएन वामन रेड्डी, आरटीएन अंबादास और डॉ. अनंत डी चिंचूरे सहायक प्राध्यापक और परियोजना अध्यक्ष उपस्थित थे। डॉ. अनंत डी चिंचूर ने कार्यक्रम पर परिचयात्मक टिप्पणी की, आरटीएन नागराज पाटिल ने सभा का स्वागत किया और आरटीएन वामन रेड्डी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर महिला कर्मचारियों को 40 से अधिक छात्रावास वितरित किए गए।

सीयूके ने सूटनूर गांव में स्वच्छता ही सेवा गतिविधियों का आयोजन किया



रविवार, 22 सितंबर: ग्राम पंचायत के सहयोग से, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने स्वच्छता और स्वच्छता के महत्व को बढ़ाने के लिए सूटनूर गांव, और तालुक में एक स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया।

कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने कहा कि हमारे घर और परिवेश को बहुत साफ और स्वच्छ रखना ही वास्तविक धन है। उन्होंने आगे कहा कि स्वच्छता न केवल बीमारियों को रोकती है बल्कि यह स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ाकर जीवन की गुणवत्ता को भी बढ़ाती है। पंचायत विकास अधिकारी (पीडीओ), ग्राम पंचायत सूटनूर, प्रवीण कुमार उडुगी ने लोगों से शौचालय बनाने और गांव को स्वच्छ और रोग-मुक्त रखने के लिए उनका उपयोग करने का आग्रह किया।

उन्होंने उन लोगों की सराहना की जिन्होंने अपने घर में शौचालयों का निर्माण किया और उनका ठीक से उपयोग किया। एक कार्यक्रम के दौरान सीयूके द्वारा गांव की स्वच्छता कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया, जिसमें बॉकथॉन, स्वच्छता अभियान और जागरूकता गतिविधियां शामिल थीं। प्रतिभागियों में सरकारी हाई स्कूल के छात्र और कर्मचारी, सीयूके एनएसएस स्वयंसेवक, एमएसडब्ल्यू और बीएसडब्ल्यू छात्र, ग्राम पंचायत कर्मचारी, आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कर्मचारी और एएनएम कर्मचारी शामिल थे। इस अवसर पर डॉ. गणपति बी सिन्नूर (नोडल अधिकारी), डॉ. दीप्ति (एनएसएस समन्वयक), और श्रीमती अंबिका हुलमनी (ग्राम पंचायत अध्यक्ष) उपस्थित थीं। आईसीटी समन्वयक श्री संजय कुमार ने स्वच्छता शपथ लेने में दर्शकों का नेतृत्व किया। कार्यक्रम में कुमारी उमाश्री खानपुर द्वारा एक प्रार्थना गीत दिखाया गया, जिसमें प्रो. पवित्रा आर. अलूर उपस्थित लोगों का स्वागत और डॉ. भाग्यश्री संचालन कर रही थीं। श्री श्रवण कुमार वरवी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सीयूके के प्रो.शेषनाथ वी भोसले वैज्ञानिकों में शीर्ष दो प्रतिशत हैं

मंगलवार 24 सितंबर: स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य ने जैविक रसायन विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों 2024 में से केमिस्ट्री, स्कूल ऑफ केमिकल साइंसेज, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, गुलबर्गा के डॉ. शेषनाथ विश्वनाथ भोसले को शामिल किया है। उनका नाम लगातार पांचवीं बार सूचीबद्ध किया गया है। कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, गुलबर्गा ने एक प्रेस बयान में कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत गर्व की बात है कि विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ केमिकल साइंसेज के जैविक रसायन विज्ञान के यूजीसी-प्रो. डॉ. शेषनाथ विश्वनाथ भोसले को दुनिया के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की सूची 2024 में शामिल किया गया है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने हाल ही में विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों में काम करने वाले दुनिया के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की सूची प्रकाशित की है। दुनिया के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की यह सूची स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा उनके मूल्यांकन के आधार पर बनाई गई है जैसे प्रकाशन, उद्धरण, एच-इंडेक्स और अनुसंधान के कैरियर दीर्घकालिक प्रभाव के लिए समग्र संकेतक।

यूजीसी-प्रोफेसर शेषनाथ विश्वनाथ भोसले ने जर्मनी के बर्लिन स्थित फ्रीड यूनिवर्सिटी से पीएचडी प्राप्त की। स्विट्जरलैंड के जिनेवा विश्वविद्यालय में पोस्ट-डॉक्टोरल अध्ययन के बाद, वह मोनाश विश्वविद्यालय, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में एक ऑस्ट्रेलियाई अनुसंधान परिषद-एपीडी फेलो के रूप में शामिल हुए, जहां उन्होंने 5 साल तक काम किया। फिर वह छह साल के लिए ऑस्ट्रेलियाई भविष्य के साथी के रूप में ऑस्ट्रेलियाई अनुसंधान परिषद के रूप में आरएमआईटी विश्वविद्यालय, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया चले गए। इसके बाद, डॉ. शेषनाथ भोसले गोवा विश्वविद्यालय, गोवा, भारत में यूजीसी-एफआरपी प्रोफेसर के रूप में शामिल हुए, जहां उन्होंने 5 साल तक काम किया। मार्च 2023 में, प्रोफेसर शेषनाथ विश्वनाथ भोसले जैविक सुपरमोलेक्यूलर रसायन विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रहे कर्नाटक के केंद्रीय विश्वविद्यालय, गुलबर्गा के स्कूल ऑफ केमिकल साइंसेज में शामिल हुए। वह रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री के फेलो, रॉयल ऑस्ट्रेलियन केमिकल इंस्टीट्यूट के सदस्य और महाराष्ट्र एकेडमी ऑफ साइंस के सदस्य हैं।

यूजीसी के प्रो. डॉ. शेषनाथ विश्वनाथ भोसले ने 10000 उद्धरण और एचइंडेक्स 45 के साथ अत्यधिक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 300 से अधिक सहकर्मी समीक्षा शोध पत्र प्रकाशित किए हैं, उन्होंने 15 पुस्तक अध्याय प्रकाशित किए हैं और एक पुस्तक अध्याय का संपादन किया है। अब तक, प्रो. भोसले ने 15 पीएच.डी. छात्रों का मार्गदर्शन किया है। वह नेचर साइंटिफिक रिपोर्ट्स, केमिस्ट्री ओपन (विली-वीसीएच), एग्रीगेट्स (विली-वीसीएच) और एमडीपीआई प्रकाशकों की कई पत्रिकाओं जैसी विभिन्न अंतरराष्ट्रीय उच्च-रैंक वाली पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड में हैं।

वह 50 से अधिक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के लिए एक समीक्षक के रूप में काम कर रहे हैं। उनकी शोध रुचि छोटे कार्बनिक अणुओं का संश्लेषण है जिसमें नैनोमैटेरियल्स, सुपरमोलेक्यूलर केमिस्ट्री, सेंसर, लिपिड केमिस्ट्री, बायो-ऑर्गेनिक केमिस्ट्री, कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण और सुपरकैपेसिटर, सिंथेटिक कार्बनिक केमिस्ट्री के आधार के साथ ऑर्गेनिक सोलर सेल्स शामिल हैं। कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण, कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने उन्हें इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई दी और कहा कि “यह अन्य शोधकर्ताओं को अनुसंधान उपलब्धियों के लिए प्रेरित करेगा और विश्वविद्यालय में अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा देगा।”



Stanford
University



कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी और शास्त्री जी की जयंती मनाई गई



बुधवार, 2 अक्टूबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मनाई, जिसमें राष्ट्र के लिए उनके योगदान पर जोर दिया गया। सोलापुर के वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस में अंग्रेजी के प्रोफेसर प्रोफेसर मनोहर पी. जोशी ने महात्मा गांधी को "भगवान से अधिक सार्वभौमिक" बताया। उन्होंने मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला, अल्बर्ट आइंस्टीन और मलाला यूसुफजई जैसे उल्लेखनीय नेताओं पर गांधी के वैश्विक प्रभाव पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर जोशी ने गांधी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, स्वराज, स्वदेशी और ट्रस्टी के सिद्धांतों को रेखांकित किया, जो एक स्थायी समाज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण में गांधी के योगदान की व्याख्या की। उन्होंने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना और विरोध के माध्यम से एक स्वतंत्र राष्ट्र की कल्पना की।

लाल बहादुर शास्त्री के बारे में बात करते हुए, उन्होंने अपने उल्लेखनीय नारे जय जवान और जय किसान को उद्धृत किया और संकट के दौरान राष्ट्र के लिए अपने अपार योगदान के बारे में बताया।

कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने समग्र विकास के गांधीवादी मॉडल और हाशिए के समुदाय के उत्थान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि गांधी का विजन आत्मनिर्भर भारत या आत्मनिर्भर भारत के साथ जुड़ा हुआ है।

इस अवसर पर स्वच्छता ही सेवा के हिस्से के रूप में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। नोडल अधिकारी, स्वच्छता ही सेवा, डॉ. गणपति बी सिन्नूर ने सभा का स्वागत किया और स्वच्छता ही सेवा के एक भाग के रूप में आयोजित विभिन्न गतिविधियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. प्रकाश बालिकाई ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. शिवम मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी, डॉ. रविकिरन नाकोड़ और डॉ. स्वप्निल चाफेकर ने भजन और राष्ट्रीय गीत प्रस्तुत किए। प्रो. चन्नवीर आर एम, प्रो. विक्रम विसाजी, प्रो. बसवराज कुबकड्डी, प्रो. जी. आर. अंगडी, प्रो. आर. एस. हेगड़ी और डीन, पुस्तकाध्यक्ष, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।



हिन्दी भारत की संपर्क भाषा है



गुरुवार, 3 अक्टूबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित राजभाषा के कार्यान्वयन की समीक्षा बैठक में भारत सरकार के राजभाषा विभाग के उप निदेशक अनिर्बन कुमार विश्वास ने कहा कि हिंदी भारत की संपर्क भाषा है। हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी देश के लोगों को एकजुट करती है और लोग भारत के किसी भी हिस्से में आत्मविश्वास से काम कर सकते हैं। हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं की मांग भी बढ़ती है और कई भाषाओं को पढ़ाने से रोजगार की क्षमता बढ़ती है। उन्होंने सीयूके के अधिकारियों से कहा कि वे लोगों को हिंदी सीखने और रुचि रखने वालों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करें।

कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने कहा कि "सीयूके राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए हर संभव कदम उठा रहा है। हम अपने कर्मचारियों और छात्रों को हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम और विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं।" इस अवसर पर वित्त अधिकारी, बी. रामादुराई, सीओई कोटा साईकृष्णा, प्रो. गणेश पवार, प्रो. विक्रम विसाजी, डॉ. पी एस सीओई कोटा साईकृष्णा, डॉ. गणपति बी सिन्नूर, डॉ. अजरुद्दीन, श्री विनोद ताण्डूरकर, उप निदेशक, राजभाषा अनुभाग, सीयूके डॉ. रेशमा नादाफ, सदस्य सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डॉ. हीरासिंह राठौड़, एजीएम प्रशासन बीएसएनएल संजीव कुमार कसबे उपस्थित थे।

छात्रों का मैगजीन इमैजिका का विमोचन हुआ

मंगलवार, 8 अक्टूबर : कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग ने छात्रों की अर्धवार्षिक पत्रिका, इमैजिका विमोचन किया, जो उनकी साहित्यिक प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने इस पहल की प्रशंसा करते हुए कहा कि पत्रिका छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति का तरीका खोजने और निपुण साहित्यकार बनने में मदद करेगी। उन्होंने आगे कहा कि भविष्य के लेखकों का निर्माण इसी तरह किया जाता है। उन्होंने छात्रों को अपने लेखन के माध्यम से मुद्दों को संबोधित करके और महत्वपूर्ण विषयों को सबसे आगे लाकर समाज के प्रवक्ता बनने के लिए प्रोत्साहित किया, जहां उन्हें देखा और संबोधित किया जा सकता है।

प्रोफेसर बसवराज पी. डोणूर, अंग्रेजी विभाग के प्रमुख और इमैजिका के मुख्य संपादक ने पत्रिका के पहले अंक, एक्सर्डिस्म के विषय को रेखांकित किया, जो दुनिया की स्पष्ट उदासीनता के खिलाफ स्थापित अस्तित्व की जटिलताओं में विद्रोह की भावना की खोज करता है।

पत्रिका के संपादक डॉ. आशीष बेलमकर ने कहा कि इमैजिका का शीर्षक स्वयं (I) के घटकों को ले जाता है, ताकि (संस्कृत में मा और कल्पना बनाई जा सके जो किसी भी प्रकार की कला के निर्माण के अभिन्न पहलू हैं। इस अंक में सभी लेख छात्रों द्वारा लिखे गये हैं। इस अवसर पर विभाग के सभी संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।



सीयूके में महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई गई



गुरुवार, 17 अक्टूबर: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने एक कार्यक्रम का आयोजन करके महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई, जिसमें महान ऋषि के योगदान और उनकी शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया। रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेलगावी के अंग्रेजी प्रो. डॉ. सविता कुसुगल ने कहा, महर्षि वाल्मीकि डाकू नहीं थे, यह लोगों के बीच फैली गलतफहमी है। उन्होंने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के फैसले का हवाला देते हुए कहा कि उन्हें डाकू कहना दंडनीय अपराध है। उन्होंने आगे कहा, रामायण राम का एक जीवनी रेखाचित्र है। यह अपनी तरह का पहला है। वाल्मीकि और उनके लेखन पर गहन शोध करने की आवश्यकता है। रामायण में कई जीवन सबक हैं जिनका हम अनुकरण कर सकते हैं। दुर्भाग्य से, आज हमने उनके उपदेश का पालन किए बिना समारोहों का अनुष्ठान करते हैं।

कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कार्यक्रम के दौरान महर्षि वाल्मीकि के महत्व पर जोर दिया, जिसमें रामायण की स्थायी प्रासंगिकता और इसके मूल्यवान जीवन पाठ पर प्रकाश डाला गया, जिसमें सभी से इसे पढ़ने का आग्रह किया गया। कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार ने रामायण द्वारा प्रदान किए गए नैतिक सबक का उल्लेख करते हुए नैतिकता और अनुशासन की कमी जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने में उनके महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. संगमेश ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया, जबकि श्री आशीष ने कार्यक्रम का संचालन किया। संगीत और ललित कला विभाग के छात्रों ने राष्ट्रीय गीत और गान का प्रदर्शन किया और कई छात्रों ने महर्षि वाल्मीकि पर भाषण दिए। इस कार्यक्रम में डीन, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।

प्रदर्शन बढ़ाने और एफपीओ एस की स्थिरता प्राप्त करने पर दो दिवसीय कार्यशाला

बुधवार, 23 अक्टूबर: केवीके कलबुर्गी में सामाजिक कार्य, सीयूके, आईसीएआर-भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद और कृषि विज्ञान केंद्र, कलबुर्गी द्वारा संयुक्त रूप से प्रदर्शन को बढ़ाने और स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) की क्षमता निर्माण पर कर्नाटक राज्य स्तरीय दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई। कलबुर्गी के कृषि विज्ञान कॉलेज के डीन डॉ. एम. एम. धनोजी ने कहा कि अब समय आ गया है कि प्राकृतिक और सरल जीवन शैली में वापस जाएं। उन्होंने पारंपरिक भोजन की आदतों को बहाल करने, शारीरिक गतिविधियों में संलग्न होने, सकारात्मक मानसिकता अपनाने और स्वस्थ और लंबे जीवन को प्राप्त करने के लिए एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करने के महत्व पर जोर दिया। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. राजू तेगेली ने किसान उत्पादक संगठनों के उत्पादों को बढ़ावा देने पर महत्वपूर्ण बाजार सुझाव दिए और कहा कि ऐसे ग्राहक हैं जो विभिन्न मूल्य बिंदुओं और विभिन्न स्थानों पर एक ही उत्पाद खरीदते हैं।

किसानों को पेशेवर बनाना चाहिए और उन्हें यह जानना चाहिए कि 200

रु- के उत्पाद को 250,300 और 400 रुपये में ग्राहकों को कैसे बेचा जाए, ताकि उत्पाद का मूल्य, ग्राहक संतुष्टि और लाभ में वृद्धि हो सके। सामाजिक कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. पवित्रा आलूर, सीयूके ने एफपीओ के साथ काम करने के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता की सराहना की। भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के वैज्ञानिक डॉ. संगप्पा ने बाजरा की लड्डू के उत्पादन और संवर्धन के सार और एफपीओ की स्थिरता प्राप्त करने के लिए उत्पाद के लिए एक बाजार बनाने के बारे में विस्तार से बताया।

प्रो. चन्नवीर आरएम ने स्थिरता प्राप्त करने के लिए एफपीओ को सशक्त बनाने के लिए एक साथ काम करने के लिए सीयूके, कृषि विज्ञान केंद्र और भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान के बीच सहयोग के सार पर जोर दिया। कार्यशाला के सह-आयोजक डॉ. लक्ष्मण जी उपस्थित थे। एफपीओ समन्वयक श्री अनिल सज्जन ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यशाला में कर्नाटक के विभिन्न हिस्सों के 17 एफपीओ के लगभग 33 किसान प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

‘वनों से तटों तक’ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

गुरुवार, 24 अक्टूबर: इतिहास और पुरातत्व विभाग, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) ने दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग, गेन्ट विश्वविद्यालय, बेल्जियम के सहयोग से एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसका शीर्षक था “फ्रॉम फारेस्ट टू शोर्स : एक्सप्लोरिंग लैंडस्केप्स एंड मटेरियल कल्चर ऑफ़ द वेस्टर्न घाट्स एंड मलबार कोस्ट।” इस कार्यक्रम में नीलगिरि के शुरुआती व्यवसाय और बस्तियों की जांच करने के लिए अंतर-अनुशासनात्मक अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके लिए हम नीलगिरि की टोडा बस्तियों के पुरातत्व, पैलियो-इकोलॉजी, आर्कियोमेट्री और नृवंश-भाषाविज्ञान का संचालन कर रहे हैं।

बेल्जियम के गेन्ट विश्वविद्यालय के भाषा और संस्कृति विभाग के दक्षिण एशियाई पुरातत्व विभाग में परियोजना निदेशक और सहायक प्राध्यापक डॉ. डेनिएला डी सिमोने ने नीलगिरि पुरातत्व अनुसंधान परियोजना का उद्देश्य भारत में नीलगिरि पहाड़ियों के ऊपरी पहाड़ों में टोडा समुदाय और मेगालिथिक प्रथाओं का अनुसंधान करना है पर प्रकाश डाला।

प्रो. बट्टू सत्यनारायण, कुलपति, सीयूके ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और हर्बल चिकित्सा, स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं, वन संरक्षण और स्थायी जीवन प्रथाओं जैसे पारंपरिक ज्ञान पर अनुसंधान के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय इतिहासकारों और पुरातत्वविदों को ऐसे जनजातीय समुदायों पर अधिक शोध अध्ययन करना चाहिए और उनकी विरासत और संस्कृति का संरक्षण करना चाहिए। सीयूके ऐसी सहयोगी परियोजनाओं के लिए पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा और हम ऐसी परियोजनाओं में अपने अनुसंधान और स्नातकोत्तर छात्रों को शामिल करेंगे। हम अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए दोनों विश्वविद्यालयों के बीच छात्रों और डॉक्टरेट छात्रों के आदान-प्रदान कार्यक्रमों की शुरुआत करेंगे। सीयूके के डॉ. अर्जुन आर, जो एक सह-परियोजना अन्वेषक भी हैं, ने पिछले साल सीयूके और गेन्ट विश्वविद्यालय, बेल्जियम के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के हिस्से के रूप में आयोजित सम्मेलन के बारे में एक परिचयात्मक भाषण दिया,



जिसमें लगभग 2000 वर्षों से वहां रहने वाले आदिवासी समुदाय नीलगिरि में टोडा समुदायों के पुरातत्व पर संयुक्त अनुसंधान किया गया था। वे टोडा भाषा बोलते हैं, जिनकी जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार घटकर लगभग 2002 हो गई थी, जो भारत के लुप्तप्राय समुदायों में से एक बन गई थी। उष्णकटिबंधीय वन पारिस्थितिकी और जलवायु समाज, संस्कृति, विरासत और भाषा के प्रति उनकी अनुकूलन क्षमता अनुसंधान के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। उन्होंने कहा कि इस परियोजना को अनुमानित बजट के साथ गेन्ट विश्वविद्यालय द्वारा 9 करोड़ रुपये वित्त पोषित किया जाएगा।

इस अवसर पर इतिहास और पुरातत्व विभाग के प्रमुख डॉ. रवि खंगई ने भी अपनी बात रखी। डॉ. सारा मोंडिनी, घेंट विश्वविद्यालय, डॉ. अब्दुल मजीद, डॉ. रेम्या वीपी, डॉ. विजय सरदे, डॉ. श्री लक्ष्मी, डॉ. सुजाता, डॉ. धनराज और सीयूके से श्री शुभम उपस्थित थे। कार्यक्रम को सीयूके का शोधार्थी श्री दीपक पाल ने संचालन किया।

महिला उत्पादक समूह के लिए उत्पाद-विकास और उद्यमिता प्रशिक्षण

शुक्रवार, 25 अक्टूबर: सामाजिक कार्य विभाग, सीयूके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए आयोजित गंजबबलाद गांव के कायका महिला उत्पादक समूह के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के तहत दीनदयाल अंत्योदय योजना के लिए उत्पाद-विकास और उद्यमिता प्रशिक्षण में सीयूके के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा कि विश्वविद्यालय-ग्राम जुड़ाव कौशल और आर्थिक मूल्य में अनुवाद करता है।

उन्होंने महिला समूहों को सशक्त बनाने में विश्वविद्यालय-सामुदायिक जुड़ाव के महत्व पर प्रकाश डाला, महिलाओं को स्थायी आजीविका के लिए खाद्य उत्पादों के विकास और विपणन के लिए कौशल प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बाजार के अवसर प्रदान करने में सीयूके की भूमिका का उल्लेख किया और सुझाव दिया कि महिलाएं बेहतर स्वास्थ्य के लिए आंगन के सब्जी उद्यानों को बढ़ावा देती हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने उल्लेख किया कि कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम टमाटर जैसे खाद्य उत्पादों को अचार जैसी वस्तुओं में संसाधित करने में मदद कर सकते हैं। उन्होंने महिलाओं को आश्वासन दिया कि सीयूके गंजबबलाद गांव में उत्पादक समूहों का समर्थन जारी रखेगा।

डॉ. अंबरीश गणाचारी, खाद्य प्रसंस्करण और खाद्य इंजीनियरिंग विभाग, आंचलिफ कृषि अनुसंधान स्टेशन, कलबुरगी ने मूंगफली कुकीज़ (चक्की) उत्पादों पर एक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया, जिसमें मूंगफली कुकीज़, पैकिंग, मूल्य निर्धारण, प्रचार और विपणन करने की प्रक्रिया को समझाया गया। सत्र में एक लाइव प्रदर्शन शामिल था जहां प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से आगे बढ़कर कुकी बनाने की तकनीकों का अभ्यास किया।

सामाजिक कार्य विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. पवित्रा आलूर ने अपनी आजीविका की स्थिति में सुधार के लिए नए उत्पादों की तैयारी सीखने के लिए महिलाओं के उत्साह की सराहना की और विभाग के विस्तार कार्यक्रमों के लगातार समर्थन के लिए विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया।

प्रो. चन्नवीर आर.एम. ने कार्यक्रम का आयोजन किया। जिला पंचायत, कलबुरगी के एनआरएलएम अधिकारी श्री अभिजीत ने भी महिला समूहों का समर्थन करने में भाग लिया। श्री. निंगप्पा गुंजबबलाद स्कूल के प्रधानाध्यापक ने भी प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन का समर्थन किया। विभिन्न एनआरएलएम समूहों की 21 महिला प्रतिभागी प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल थीं।



इसे स्वच्छ और हरा-भरा रखें

**'स्वच्छता ही सेवा'... इस आदर्श वाक्य के साथ, आइए हम स्वच्छता को एक जन आंदोलन बनाएं।
#मनकीबात**



**आ प की स ह भा गि ता की
अ पे क्षा**

सं पा द की य टी म :

संपादकीय टीम: प्रो. बट्टू सत्यनारायण, माननीय कुलपति, सीयूके
संपादक : डॉ. ओइनाम बेदाजित मीतेई : सह संपादक: डॉ. के. कार्तिक, डॉ. रूपा रानी सोनोवाल
डॉ. दीप्ति: प्रेस विज्ञप्ति: डॉ. गणपति बी. सिन्नूर: हिंदी अनुवाद : डॉ. रेशमा एल. नदाफ, उप निदेशक (राजभाषा)
प्रकाशक: प्रो. आर. आर. बिरादार, कुलसचिव, ककेवि



कृपया विभागीय कार्यक्रमों/उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण ई-मेल: bulletin@cuk.ac.in पर भेजें ताकि इसे सीयूके बुलेटिन में शामिल किया जा सके।